बाप भी ऐसे ही समझाते हैं। सतयुग में सुख ही सुख है। अभी है संगमयुग। कोई से छुट्टी भी न ले सकेंगे। पीनी आदि कुछ भी कर न सकेंगे। बुद्धि भी ऐसी कहती है हम बाप के बच्चे पार्टधारी हैं। पिछाड़ी में विनाश ज़रूर होना है। कितने अच्छे–2 सामान बनाते रहते हैं, जो कुछ भी तकलीफ़ न हो। बहुत सुखाला मौत हो जाता। हॉस्पिटल आदि की दरकार ही नहीं। 21 जन्म सर्जन होता नहीं। न बैरिस्टर न जज। धर्मराज होगा ही नहीं। धर्मराज होगा ही नहीं। बच्चों को खुशी भी देते हैं, धैर्य भी देते हैं। साहूकारों के लिए तो यहाँ ही स्वर्ग़ है। यहाँ राजाई के हकदार ग़रीब ही बनते हैं। साहूकारों को धन–दौलत, बाल–बच्चों से ही ममत्व निकाल न सके। महल, एरोप्लैन, बच्चे आदि याद आते रहेंगे। वहाँ की तो चीज़ ही और होगी। साइंस दान भी क्या करते हैं एक हार्ट निकाल दूसरी डालते हैं फिर भी हिम्मत तो करते हैं ना। 5/6 मास चल पड़ता है; क्योंकि आर्टीफिशियल चीज़ें हैं ना। भारत सच्च खंड था पुराना को झूठ खंड कहा जाता है। वहाँ तो सभी कुछ नया ही होता है। यहाँ तो झूठ बिगर चल न सके। कोई–2 बहुत थोड़े हैं तो सच्च पर ही चलते हैं। बच्चों के लिए भी गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। बाप ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर है ना। कहते हैं, बच्चों अभी मैं आया हूँ अभी तुमको पवित्र बनना पड़े। तुम आए हो यह (ल.ना.) बनने के लिए। तुमसे कोई छीन न सके। बना–बनाया ड्रामा है। ईश्वर की कृपा की बात ही नहीं। उनको आना ही है बच्चों को पढ़ाने। कल्प–2 पढ़ाते हैं। पावन बनाना भी पढ़ाई का एक अंग है। अभी तुम सभी एक्टर्स हो। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह एक ही खेल है। सांवरा से गोरा बनते हैं। कल्प का संगम युग है यह। इस पढ़ाई से कितना सुख मिलता है। तो पूरा अटेन्शन देना है। रहना भी अपने घर में है। कृष्ण को याद करने से पाप कटेंगे नहीं। कितना नुकसान हो जाता। वह सभी हैं भक्ति मार्ग। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 1/6/68 ओमशान्ति

रूहानी बच्चों ने अपने सर्विस का समाचार सुनाया महावलेश्वर का। किसने यह पूछा? (बाप दादा ने) बाप ने दादा द्वारा पूछा तो गोया बाप दादा ने पूछा। यह तो बच्चों को निश्चय है जो ब्राह्मण हैं। बाकी जो ब्राह्मण नहीं उनको निश्चय नहीं है। हो सकता है अगर ..... तकदीर हो तो समझ सकते हैं, बरोबर बेहद का बाप और हद का दादा ; क्योंकि बेहद का बाप आते हैं हद के दादा के पास अनेक बार। ..... अभी जिनको निश्चय है यह बेहद का बाप है, थोड़े ही रोज़ के लिए आए हैं नई दुनियाँ स्वर्ग़ बनाने लिए। तो ज़रूर पुरुषार्थ कर बन सकते हैं ; परंतु तकदीर में न है तो कब निश्चय नहीं होता। यह बेहद का बाबा है। जिससे ही और सभी वर्सा लेते हैं अथवा सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी ने वर्सा लिया है। हम भी पुरुषार्थ कर क्यों न लेवें ; परंतु तक़दीर में नहीं है तो बुद्धि में बैठता ही नहीं। सुनते भी हैं ; परंतु कान से निकल जाता। समझ जाते हैं बाबा राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हर मर्तबे के होते हैं सो भी जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर की बात है। तो क्यों नहीं हम पुरुषार्थ करें। ऐसे को फॉलो करें, कदम–कदम जिसके कदम में पदम हो। यह बनने का है। हम भी फॉलो कर क्यों नहीं विजय माला के दाना बन जावें। परंतु ड्रामा में नहीं है तो क्या करेंगे या उनके पार्ट में ही नहीं तो इतना पुरुषार्थ भी नहीं कर सकते हैं। जिनका पार्ट है वह पुरुषार्थ भी करते रहते हैं। बहुत–2 मीठे बन जाते हैं। बाप बहुत मीठा है ना। यह भी जानते हो सभी से मुलमी का ..... हम ही बनते हैं। फीलिंग आती है, हम तुच्छ बुद्धि थे। अभी बाप बिल्कुल स्वच्छ बुद्धि बनाते हैं। ऐसा कब किसको दुःख नहीं देगा ; क्योंकि बाप किसको भी दुःख नहीं देते हैं। अपनी ग्रह चारी से ही अपने को दुःखी करते हैं। बाप नहीं दे सकता। बाप तो सबकी सद्गति करने आए हैं। कोई तंग भी करते हैं तो भी (बच्चे हैं) तो सभी को जाना है। जो तंग करते हैं, सज़ाएँ भी वह खाते हैं। बाप तो है सुख दाता। बेहद का सुख (देने)

बाप आया हुआ है। यह निश्चय है हम किसको भी दुःख नहीं देंगे। पुरुषार्थ करते रहते हैं। अभी वह अवस्था नहीं है। बेकायदे काम तो करते आए हैं। पापात्मा बनते आए हैं। बाप कते हैं, सबसे गंदा काम है विकार का। यह है विकारी दुनियाँ। वह है निर्विकारी दुनियाँ। वायसलेस वर्ल्ड–विषियस वर्ल्ड कहा जाता है ना। यह अक्षर अभी तुम्हारी बुद्धि में है। यह सबक़ बाप ही पढ़ाते हैं। वेद–शास्त्र आदि भल पढ़े ; परंतु उनसे फायदा कुछ भी नहीं, सिवाय नुकसान के। इस पढ़ाई में नुकसान की कोई बात नहीं। शांतिधाम तो चले जावेंगे ना। कहते हैं मीठे–2 बच्चे पतित तो हो। बुलाते हो, हे पतित–पावन आओ। पावन थे। अभी नहीं हैं। फ़ील क..... हम पतित थे ज़रूर। सन्यासी भी समझते थे हम पतित थे। कोई–2 नास्तिक मानते नहीं; परंतु पुर्नजन्म होता ज़रूर। कई नास्तिक होते हैं कुछ भी नहीं समझते। यहाँ तो तुम बच्चे समझते हो कोई (विकर्म न) करना है, किसको भी दुःख न देना है। फिर भी माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। जब तक पढ़ाई हो तब तक युद्ध चालू ही है। यह भी ज़रूर है माया कम नहीं है। जितनी ताकत बाप में है उतनी (ताकत) माया में है। बड़ी ज़बरदस्त है। सभी हैं युद्ध के मैदान में। तो आधा–2 होता होगा। बहुत थोड़(ा) मार्ज़िन रह(ता) है। बाकी हरा देते हैं। बच्चे जो अनन्य हैं उनको अपनी ऊपर बड़ी ख़बरदारी रखना है। ऐसा कर्तव्य न करे जो नाम बदनाम हो। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु भी है। बच्चों को यह भी पक्का है। बाप कह(ते) हैं, मैं इस रथ में प्रवेश कर रचयिता और रचना का परिचय देता हूँ। ईश्वर का परिचय कब कोई दे न सके। यह शिक्षा कब कोई दे न सके। बाप कहते हैं, बच्चे मामेकं याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। बच(चे) भी समझते हैं गैरन्टी है। हमारी गफ़लत है जो हम दौड़ी नहीं पहन सकते हैं। फ़ील कर सकते हैं। और है बहुत ईज़ी। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाबा बाबा हे परमपिता आत्मा कहती है ना। गा(या) भी जाता है शिव रात्रि। अभी तुम समझते हो रात्रि क्यों कहते हैं। यह तो सिवाय बाप के कोई समझा न सके। सभी को कहते हैं, हम राजयोग सीख रहे हैं। यह भी समझाया है हर जन्(म) में फिचर्स अलग–2। कृष्ण तो फिर सतयुग में ही हो सकता है। तो बाप कितना रोज़ समझाते रहते हैं। समझने की कार्ज़िन (मार्ज़िन) है। आगे चलकर बाप बतलाते रहेंगे। समझते रहेंगे। यह भी तुम जानते हो दिन–प्रतिदिन बहुत समझ में आता जाता (है) हम सम(झदार) बनते जाते हैं। बाप कहते हैं, तुम बहुत बेसमझ बन गये हो। यह भी तुमको पता न(हीं) हम कितना होशियार थे। बाप कहते हैं, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं समझाता हूँ। बाप बताते हैं, तुम्हारे भी जो अनन्य हैं, पंडा बन ले आते हैं तो स्टूडेन्ट समझते हैं यह होशियार है। हमको भी ऐसा होशियार बनना है। हमज़िन्स का कल्याण हो। पुरुषार्थ में लगा रहना चाहिए। तुम भी .. ... हो आबू के बच्चों की तकदीर जगावें। अकेला बाप थोड़े ही काम करते हैं। तुम भी उनके बच्चे मददगार ..... अच्छा सुबह की निष्ठा यहाँ के लिए है। बाहर में कोई को बाहर से आने लिए नहीं क(हते) सेंटर पर रहने वाले भल कर सकते हैं। यह है अपन को पावन बनाने की युक्ति। बाप कहते हैं, अपने (को) देखते रहो। फिर तुम समझ सकते हो। विनाश होना चाहिए? कहेंगे नहीं। हम फ़ेल हो जावेंगे। ड्रामा अ(नुसार) टाइम मुकर्रर है। जब कर्मातीत अवस्था होगी और भक्ति का समय पूरा होगा तब। बाकी तो सहन करना ही है। अत्याचार आदि होते हैं, वह भी देख रहे हो। शूर्पनखा, पूतना यह सभी इस समय के ना ..... द्रौपदी पुकारती है। अबलाओं पर अत्याचार होता है ना। बाप श्रीमत देते रहते हैं। सारी दुनियाँ में तुम सितारे हो लक्कीएस्ट इन दी वर्ल्ड।

अच्छा मीठे–मीठे रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।